आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2376 • उदयपुर, शनिवार 26 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

सेवा–जगत्
सेवा पथ पर आपका अपना, नारायण सेवा संस्थान

देश में होगा 14 वाटर एयरोड्रोम का संजाल

क्षेत्रीय कनेक्टिविटी स्कीम उड़ान के तहत केंद्र की ओर से राज्य सरकारों और एयरपोर्ट आपरेटरों के तरफ से कई एयरलाइनों का चयन किया गया है ताकि अनारक्षित और आरक्षित एयरपोर्टों से उड़ानों को बढ़ावा दिया जा सके ।

नागरिक उड्डयन मंत्री ने कहा कि देश भर में कुल 28 जल विमान (सीप्लेन) रूट और 14 वाटर एयरोड्रोम का विभिन्न चरणों में विकास किया जाए।

भारत में जलविमान की उड़ानों की विधिवत सेवाएं स्थापित करने के लिए नागरिक उड्डयन, बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालयों ने सहमति पत्र (एमओयू) पर दस्तखत किए हैं। रीजनल कनेक्टिविटी स्कीम के तहत भारत में 28 जल विमान मार्ग शुरू किए जाने हैं। इसके अलावा गुजरात, असम, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, अंडमान एवं निकोबार और लक्षद्वीप में विभिन्न चरणों में 14 वाटर एयरोड्रोम भी विकसित किए जाने हैं।

इसके साथ ही उड़ानों का किराया भी जेबों के अनुकूल रखने का प्रयास रहेगा। भारत में जलविमान की सेवाओं को स्थापित करने के लिए संस्थागत प्रक्रिया की शुरुआत हो चुकी है और सहमति पत्र का भी निर्धारण होना है।

जी–7 सम्मेलन में 6 संकल्पों पर सहमति

विकासशील देशों के लिए हरित विकास कोष बनाने के वादे के साथ ब्रिटेन में जी–7 शिखर सम्मेलन सम्मेलन में कुल 6 बिंदुओं पर सहमति बनी। इसमें 'हरित क्रांति' के लिए वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने का संकल्प किया।

इसमें 2050 तक नेट–जीरो कॉर्बन उत्सर्जन, 2030 तक 30 प्रतिशत भूमि व महासागरों का संरक्षण शामिल है। जरूरतमंद देशों को अब 1 अरब वैक्सीन देने, बेहतर कर प्रणाली, 100 दिन में महामारी से लड़ने की क्षमता बनाने, शिक्षा के लिए 2.75 बिलियन डॉलर का फंड जुटा कर 4 करोड़ से अधिक लड़कियों को शिक्षा की धारा में लाने का वादा भी है।

एक वक्त के भोजन को भी मोहताज सारा परिवार, दुःखी रामदास को मिली मदद

मानवता को झकझोर देने वाली दर्द भरी दास्तां है गुप्तेश्वर के पास बिलिया गांव में रहने वाले रामदास वैष्णव की। रामदास वैष्णव कारीगर है, जो अन्य श्रमिकों की तरह रोज कमाते और खाते है! कोरोना में उनका काम बंद है। परिवार के 6 सदस्यों के सामने भूख को शान्त करना मुश्किल हो गया उन्होंने नारायण सेवा संस्थान से मदद की गुहार लगाई।

संस्थान ने उनकी मदद करते हुए एक माह का राशन प्रदान किया। रामदास राशन पाकर संतुष्ट हुए ओर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि ऐसे ही 12 अन्य गरीब मजदूर परिवारों को भी निदेशक वंदना अग्रवाल की टीम ने राहत पहुंचायी।

घिसट घिसट कर संस्थान में आया लौटते वक्त अपने पैरों पर खड़ा था

सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) जिले के गांव भाबसी निवासी श्री धर्मवीर सिंह के पुत्र अर्पित जन्म से ही एक पांव में घुटनों से नीचे तक दिव्यांग था। गरीबी के कारण न उसका इलाज हो सका और न ही उसे पढ़ने के से भेजा जा सका। माता– पिता बच्चे की इस हालत और उसके भविष्य को लेकर सदैव चिंतित रहते। घर का माहौल हर समय उदासी से भरा रहता था।

धर्मवीर बताते हैं एक दिन उन्हें किसी परिचित में नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों की निःशुल्क चिकित्सा, कृत्रिम अंक लगाने और सहायक उपकरण दिये जाने की जानकारी दी। उसके बाद वे बेटे को लेकर उदयपुर आए और संस्थान के डॉक्टर से मिले जिन्होंने दिलासा देते हुए कहा कि आप बेटे को गोद में उठा कर लाए है किंतु वह अपने पांव पर खड़ा होकर चलते हुए अपने घर में प्रवेश करेगा। कुछ दिनों के इलाज के बाद उसे विशेष कैलीपर पहनाया गया।

अर्पित जब पिता के साथ पुनः अपने घर के लिए रवाना हुआ तब यह संस्थान के अस्पताल से चलते हुए ही बाहर निकला। पिता ने कहा मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। अब इसके लिए मैं वो सब– कुछ करूंगा जिसका सपना देखा करता था।

सोचने का तरीका

एक समय की बात है। एक गाँव था। उस गाँव की विशेषता थी कि उस गाँव का कोई भी व्यक्ति जूते नहीं पहनता था। वहाँ का हर व्यक्ति चाहे वह बूढ़ा हो या जवान, पुरुष हो या महिला, बड़ा हो या बच्चा, लड़का हो या लड़की, सभी व्यक्ति नंगे पाँव रहते थे। उस गाँव में शहर के दो जूता व्यापारी पहुँचे। उनमें से एक व्यापारी वहाँ से यह सोचकर वापस लौट आया कि यहाँ के लोग जूते तो पहनते ही नहीं है, यहाँ पर मेरा व्यवसाय कैसे चलेगा?

परन्तु दूसरे व्यापारी ने वहाँ पर यह सोच कर अपना व्यापार शुरू कर दिया कि यहाँ के किसी भी व्यक्ति के पाँव में जूते नहीं है, यहाँ तो हर व्यक्ति मुझसे जूते–चप्पल खरीदेगा और मेरा व्यापार यहाँ पर अवश्य ही चलेगा। कुछ समय पश्चात् उस व्यापारी का व्यापार अच्छा चलने लगा और वह बहुत अमीर हो गया। हमें अपनी नकारात्मक सोच को सकारात्मक सोच में बदलना होगा। सच ही कहा है कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने –

है कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके वीर नर के मग में।
खम ठोंक ठेलता है, जब नर,
पर्वत के जाते पांव उखड़।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।

बड़ा दान

दान मानव जीवन का महत्व अंग है। "देना" ही जीवन है। परंतु दान भी सामर्थ्यानुसार होना चाहिए। दान में न अहंकार होना चाहिए, न ही उसमें कृपणता होना चाहिए। एक बार स्वामी स्वामी विवेकानन्द के प्रवचन के दौरान लोग दान दे रहे थे। सभी से दान, मंच के नीचे बैठे संग्रहकर्ता द्वारा स्वीकार किया जा रहा था। अचानक एक बूढ़ी औरत जो फटे कपड़ों में थी, मंच के ऊपर चढ़ने लगी तो अनुयायियों ने उसे रोकने का प्रयास किया।

इस पर स्वामी जी ने कहा, "इन्हें मत रोको, ऊपर आने दो।" बूढ़ी औरत ऊपर चढ़ी और स्वामी जी के समीप पहुँचकर अपनी फटी साड़ी से तीन रुपये निकालकर स्वामी को भेंट किए और कहा, "मेरे पास यही है।"

स्वामी जी ने सहर्ष भेंट स्वीकार की और उस बूढ़ी औरत के पैर छुए। यह देख कर सभी अचरज में पड़ गए। स्वामी जी ने सभी की शंका का निवारण करते हुए कहा, "सभी दानदाता जिन्होंने बड़ी–बड़ी रकम का दान दिया, वे धन्यवाद के पात्र हैं, परंतु उन्होंने समस्त में से अंश का दान दिया, लेकिन इस महिला का दान इन बड़ी रकम वाले दानों से भी बड़ा है, क्योंकि इन्होंने अपने भविष्य की परवाह न करते हुए लोक–कल्याण के लिए अपना सर्वस्व दान कर दिया, अतः ये पूजनीय है।"

यदि बाल्टी भर पानी से एक लोटा पानी ले लिया जाए तो बाल्टी में भरे पानी की मात्रा में कोई विशेष कमी नही आती, परन्तु लोटे भर पानी में से एक गिलास पानी ले लेना महत्व रखता है। दान का महत्व उसकी धन क्षमता से नहीं होता है, अपितु उसको करने वाले की भावना से होता है।

प्रेम बाँटे : लाभ ही लाभ

दो भाई थे । आपस में बहुत प्यार था।

खेत अलग अलग थे आजू–बाजू। बड़ा भाई शादीशुदा था। छोटा अकेला। एक बार खेती बहुत अच्छी हुई अनाज बहुत हुआ। खेत में काम करते करते बड़ा भाई बगल के खेत में छोटे भाई को खेत देखने का कहकर खाना खाने चला गया। उसके जाते ही छोटा भाई सोचने लगा ।

खेती तो अच्छी हुई इस बार अनाज भी बहुत हुआ। मैं तो अकेला हूँ, बड़े भाई की तो गृहस्थी है। मेरे लिए तो ये अनाज जरुरत से ज्यादा है, भैया के साथ तो भाभी बच्चे है। उन्हें जरुरत ज्यादा है। ऐसा विचारकर वह 10 बोरे अनाज बड़े भाई के अनाज में डाल देता है। बड़ा भाई भोजन करके आता है। उसके आते ही छोटा भाई भोजन के लिए चला जाता है। भाई के जाते ही वह विचारता है ।

मेरा गृहस्थ जीवन तो अच्छे से चल रहा है...भाई को तो अभी गृहस्थी जमाना है... उसे अभी जिम्मेदारियां सम्हालना है... मै इतने अनाज का क्या करूँगा.. ऐसा विचारकर उसने 10 बोरे अनाज छोटे भाई के खेत में डाल दिया...। दोनों भाइयों के मन में हर्ष था। अनाज उतना का उतना ही था और हर्ष, स्नेह, वात्सल्य बढ़ा हुआ था...।

सोच अच्छी रखेंगें तो प्रेम अपने आप बढ़ेगा, अगर ऐसा प्रेम भाई–भाई में हुआ तो दुनिया की कोई भी ताकत आपके परिवार को तोड़ नहीं सकती।

बुद्ध का मौन

बुद्ध को जब बोध प्राप्त हुआ तो कहा जाता है कि वे एक सप्ताह तक मौन रहे। उन्होंने एक भी शब्द नहीं बोला। पौराणिक कथाएँ कहती है कि सभी देवता चिंता में पड़ गये। उनसे बोलने की याचना की। मौन समाप्त होने पर वे बोले , जो जानते हैं वे मेरे कहने के बिना भी जानते हैं और जो नहीं जानते, वे मेरे कहने पर भी नहीं जानेंगे। इसलिए मैंने मौन धारण किया था। जो बहुत ही आत्मीय और व्यक्तिगत हो उसे कैसे व्यक्त किया जा सकता है? देवताओं ने उनसे कहा, जो आप कह रहे हैं, वह सत्य है परन्तु उनके बारे में सोचें जिनको पूरी तरह से बोध भी नहीं हुआ है और पूरी तरह से अज्ञानी भी नहीं है। उनके लिए आपके थोड़े से शब्द भी प्रेरणादायक होंगे। तब आपके द्वारा बोला गया हर शब्द मौन का सृजन करेगा। बुद्ध के शब्द निश्चित ही मौन का सृजन करते हैं क्योंकि बुद्ध मौन की प्रतिमूर्ति हैं। मौन जीवन का स्रोत है। जब लोग क्रोधित होते हैं तो वे चिल्लाते हैं और फिर मौन हो जाते हैं। कोई दुःखी होता है, तब वह भी मौन की शरण में जाता है। जब कोई ज्ञानी होता है, तब भी वहाँ पर मौन होता है।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

संस्थान सेवा कार्य विवरण-जून,2021

क्र.सं.	सेवा कार्य	पिछले माह के आंकडे			मई माह के आंकडे
01	दिव्यांग ऑपरेशन सख्या	423750			423750
02	व्हील चेयर वितरण सख्या	273253			273403
03	ट्राई साईकिल वितरण सख्या	263472			263522
04	बैसाखी वितरण सख्या	295039			295289
05	श्रवण यंत्र वितरण संख्या	55004			55004
06	सिलाई मशीन वितरण संख्या	5220			5220
07	कृत्रिम अंग वितरण संख्या	16162			16462
08	केलीपर लाभान्वित संख्या	357697			358197
09	नशामुक्ति संकल्प	37749			37749
10	नारायण रोटी पैकेट	1054400			1078400
11	अन्न वितरण (किलो में)	16380372			16382872
12	भोजन थाली वितरण रोगीयों कि संख्या	39163000			39172000
13	वस्त्र वितरण संख्या	27077320			27077320
14	स्कुल युनिफार्म वितरण सख्या	150500			150500
15	स्वेटर वितरण संख्या	135500			135500
16	कम्बल वितरण संख्या	172000			172000
17	विवाह लाभान्वित जोड़े	2109 जोड़े (35वां विवाह सम्पन्न)			2109 जोड़े
18	हेंडपम्प सख्या	49			49
19	आवासीय विद्यालय	वर्तमान में बच्चों कि संख्या 95	कुल सीटे 75	अब तक लाभान्वित 455	455
20	नारायण चिल्ड्रन एकेडमी	वर्तमान में बच्चों कि संख्या 277	कुल सीटे 300	अब तक लाभान्वित 821	821
21	भगवान महावीर निराश्रित बालगृह	वर्तमान में बच्चों कि संख्या 184	कुल सीटे 200	अब तक लाभान्वित 3160	3160
22	व्यवसायिक प्रशिक्षण विवरण	सिलाई कुल बैच - 50 लाभान्वित - 961	मोबाइल कुल बैच-55 लाभान्वित-871	कम्प्युटर कुल बैच -56 लाभान्वित-878	सिलाई-961 मोबाईल- 871 कम्प्युटर- 878
	कोरोना रिलीफ सेवा अब तक				
23	फूड पैकेट्स				213051
24	राशन किट				29603
25	मास्क डिस्ट्रीब्यूशन				92504
26	कोरोना दवाई किट				1891
27	एम्बुलेंस/ऑक्सीजन/हॉस्पीटल बेड				482

अपनी जुबानी

संस्थान की कोरोना सेवाओं से लाभान्वितों के अनुभव

मैं और मेरे परिवार के अन्य सदस्य माता–पिता, पत्नी और दोनों बहनें कोरोना पॉजिटिव हो गए। हमनें डॉक्टर्स की सलाह पर होम आइसोलेट रहने का फैसला लिया। लेकिन हम सभी संक्रमितों के सामने दोनों समय के भोजन की समस्या थी। हमारा खाना कौन बनाएं? तभी हमें नारायण सेवा के घर–घर भोजन सेवा की जानकारी मिली।

संस्थान की हेल्पलाइन नम्बर पर कॉल किया। हमें 6 पैकेट भोजन भेजना शुरू कर दिया। वास्तव में खाना– बहुत स्वादिष्ट था। अच्छे से पैकिंग में सुरक्षित पैकेट 15 दिन तक निरन्तर मिलता रहा स्वादिष्ट भोजन। अब हमारा पूरा परिवार पूर्ण स्वस्थ हो गया। इस सेवा के लिए संस्थान का बहुत आभार।

– अंकित माथुर, उदयपुर

मेरे पिता जी 5 दिन पहले कोरोना संक्रमित निकले। उन्हें घर पर रखकर ईलाज शुरू किया लेकिन उनका ऑक्सीजन लेवल गिरने लगा। हमारी फिक्र बढ़ने लगी। हॉस्पीटल में ऑक्सीजन बेड के लिए प्रयास किया पर मिला नहीं। मदद के लिए नारायण सेवा संस्थान से सम्पर्क किया। तो उन्होंने ऑक्सीजन सिलेन्डर उपलब्ध करा दिया। 2–3 दिन ऑक्सीजन पर रहने के बाद उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ। अब पिता जी पूर्ण कुशल है। विपदा की घड़ी में संस्थान की मदद के लिए हम सदैव कृतज्ञ रहेंगे।

– मोहन मीणा, डबोक

सम्पादकीय

कहा है दया धर्म का मूल है। धर्म यानी धारण करने योग्य सद्वृत्ति दया याने करुणा का भावानुवाद। मानव में करुणा का भाव स्थायी है। वह अनुभाव, विभाव से संचरित होकर दया के रूप में प्रकट होता है। यदि हमारी करुणा–धारा सदा प्रवाहमयी है तो फिर दया का दरिया बनते देर ही क्या लगेगी? जब दया का प्राकट्य निरंतर होगा तो धार्मिकता तो उसका उपजात है ही। इसी धर्म के लिए मनुष्य को संत, हर दार्शनिक और हर उपदेशक, मार्गदर्शक चेताता रहा है। आज चेतना को चैतन्य करके, अनुभव के साथ संयोजित करके, व्यावहारिकता में उतारने की परम आवश्यकता है।

धर्म की धारणा के अनेक बीज हैं उनमें दया भी प्रमुख है। दया के भाव उपजते ही करुणा धारा उत्पन्न होकर बहने लगती है। इस करुणाधारा से ईश्वरीय कार्य सधने लगते हैं। यही धर्म का आचरण होकर संसार को सुखी करने का उपक्रम बन जाता है।

कुछ काव्यमय

आदिकाल से चल रहे,
सेवा भरे प्रयास।
सेवा से पहचान है,
सेवा ही है सांस।।
चिर परिचित है कल्पना,
सेवा–सच्ची राह।
सेवा से ही चल रहा,
सुन्दर धर्म–प्रवाह।।
सेवा भी है साधना,
कहते वेद–पुराण।
सेवक प्रभु का लाड़ला,
मिलते कई प्रमाण।।
जो सेवा की राह पर,
चले करे संतोश।
खुद–ब–खुद मिट जायेंगे,
उसके सारे दोश।।
सेवा की पतवार है,
लहरों भरा उछाव।
भवसागर से तार दे,
ऐसी निर्मल नाव।।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

खुद डरें नहीं,
और न ही दूसरों को डराएं,
कोरोना वायरस के प्रति,
लोगों को जागरूक बनाएं।

अपनों से अपनी बात

प्रभु कृपा से करुणा बढ़े

चक्रवर्ती राजा जनक की मखमली गदलों पर करवटें बदलते हुए झपकी लगी ही थी कि एक सपना आया। पड़ोसी देश के राजा ने संदेश भेजा –"युद्ध के लिए तैयार हो जाओ अथवा अधीनता स्वीकार करो।" युद्ध होना था–हुआ।

राजा जनक बुरी तरह हारे। सब कुछ छोड़कर भागे जा रहे हैं –भूखे प्यासे, शत्रुओं द्वारा पकड़े जाने का बड़ा भय, तीन दिन से अन्न का दाना नहीं गया पेट में। कपड़े तो तार–तार हो ही गये थे, लगा कि भूख के मारे प्राण भी साथ छोड़ देंगे।

सामने नजर गई तो देखते हैं कि लम्बी सी लाईन लगी हुई है। सबके हाथों में कटोरे हैं। तख्ते पर बैठा हुआ व्यक्ति कड़ाह में से खिचड़ी निकालता है तथा एक–एक व्यक्ति के कटोरे में रख देता है। भूख के मारे राजा जनक लाईन में लग गये। दो घण्टे के बाद जब नम्बर आया तो देखा कि मात्र थोड़ी सी ही खिचड़ी बची है। जैसे ही उनका नम्बर आया मात्र जली हुई कुछ खिचड़ी चिपकी हुई बाकी रह गई थी।

बड़े करुण हृदय से बोले सेठजी किसी तरह से यह जली हुई ही मुझे देदो, भूख बहुत लगी है।" "जैसी तुम्हारी इच्छा" कहते हुए मुनीमजी ने जली हुए परत के दो चम्मच फैले हुए दोनों हाथों पर रख दिये। काँपते हुए हाथ मुँह की तरफ बड़े ही थे कि कुत्ते ने झपट्टा मारा, जनक जी कराह उठे, और उनकी चीत्कार सुनते ही सुनयना घबरा कर पूछा–"क्या हुआ महाराज?" आप चिल्लाये कैसे?" विदेहराज तो चारों तरफ देख रहे थे, दो ही प्रश्न बार–बार पूछ रहे थे यह सच या वह सच ? तथा भूख की इतनी व्याकुलता कैसे हो,

पहले प्रश्न का उत्तर तो अष्टावक्र जी महाराज भरी सभा में जनक जी को दिया था, परन्तु प्रश्न अभी भी समाज के सामने उत्तर की प्रतीक्षा रहा है। कुछ कहावतें हमने झूठी होती देखी। उनमें से एक यह भी कि "भगवान भूखा उठाता है पर भूखा सोने नहीं।" उन आदिवासियों के झौंपड़े भी हमने जहाँ तीन–तीन दिन से चूल्हे नहीं जले।

आइए, आप और हम भी ऐसे निराश्रित लोगों की आंखों में झांकने का प्रयास करें। हृदय इन प्रश्नों का उत्तर देगा – हमारी करुणा –प्रभु कृपा से बढ़े।

–कैलाश 'मानव'

ईमानदारी

मुसीबत में फँसे किसी भी व्यक्ति का कभी भी फायदा मत उठाओ। मजबूरी का फायदा उठाना एक अमानवीय कृत्य है। पहले से ही परेशान व्यक्ति को और दुःखी करना स्वयं के लिए, स्वयं ही पाप का घड़ा भरना है।

किसी गाँव में एक जमींदार था। अनेक किसान उसके खेतों पर काम करते थे। एक दिन एक किसान के हाथ से हल जोतते–जोतते हल टूट गया। वह किसान गाँव के बढ़ई के पास गया और हल ठीक करने की प्रार्थना की।

बढ़ई ने अत्यन्त कम मूल्य में वह हल ठीक कर दिया। यह बात जब जमींदार को पता चली और उसने वह हल देखा तो वह आश्चर्यचकित हो गया। इतना सुंदर और मजबूत हल जमींदार ने पहले कभी भी नहीं देखा था। उसके मन में कम मूल्य में ऐसे हल बनवाकर ऊँचे दाम में बेचने की योजना आई। उसके मन में लोभ पैदा हो गया था। वह बढ़ई के पास गया और बढ़ई से वैसे ही हल मनचाहे मूल्य पर बनाने की बात कही। परंतु बढ़ई एक सज्जन व्यक्ति था। उसने जमींदार से कहा, "आप चाहे मुझे मरवा दें, परन्तु मैं आपके लिए हल कभी नहीं बनाऊँगा, क्योंकि मुझे पता है कि आप इन हलों को उच्च मूल्य पर गरीबों को बेचेंगे।" जमींदार निराश होकर वहाँ से चला गया।

लोभी व्यक्ति का लोभ कभी भी शांत नहीं होता। वह अपने लोभ की पूर्ति करने के लिए मजबूर और दुःखी व्यक्तियों का शोषण कर फायदा उठाएगा, परन्तु उसे यह नहीं पता कि उसका यह कार्य उसे नरकगामी बना रहा है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

पाली पहुँचते ही कैलाश, भाईसा के साथ इस कार्य को पूर्ण करने की बारीकियों पर चर्चा में व्यस्त हो गया। गेहूं की व्यवस्था का जिम्मा भाईसा ने उठा लिया, बाकी सारा कार्य सम्पन्न करने का दायित्व कैलाश ने लिया। काम भारी था। सत्तू बनवाने से लेकर, गांवों तक इसके परिवहन और फिर वंचितों में वितरण का समूचा अभियान सफलता पूर्वक संचालित करना था।

कैलाश को इस तरह के चुनौती भरे कार्यों को सम्पादित करने में बहुत मजा आता था और वह इनमें प्रवीण भी था। उसने बैठकर समूचे अभियान की रूपरेखा तैयार की।

सबसे पहले उसने वितरण की योजना बनाई। इस हेतु कार्ड छपवाये जिन पर परिवार के मुखिया का नाम, सदस्यों की संख्या, गांव का नाम तथा इनके नीचे एक टेबल बना दिया जिसमें 6 खंड बना दिये। इनमें वितरण की तिथि तथा सामग्री की मात्रा अंकित कर लिखने की जगह बना दी।

एक व्यक्ति को प्रतिदिन 100 ग्राम सत्तू देने का विचार किया। वितरण 15 दिन के अन्तराल से किया जाये तो प्रति व्यक्ति डेढ किलो सत्तू वितरित करना तय किया। परिवार में औसतन 4 सदस्य भी हुए तो प्रति परिवार 6 किलो हुआ।

इस बीच तेल तथा शक्कर से लदी ट्रकें पहुंच गई। सामान उतरवा कर सुरक्षित तरीके से गोदामों में रखवा दिया गया। अब तो इनका सत्तू बनाना और बांटना ही शेष रह गया था। बनाने का कार्य तो यहीं करना था मगर बांटने तो गांवों में जाना था, पैसे वालों को देना नहीं था, गरीबों तक ही पहुंचे यही उद्देश्य था। मफत काका भी यही चाहते थे और राजमल व स्वयं कैलाश भी यही चाहता था।

इसके लिये एक बार गांव में जाकर सर्वे करना तय किया। हर गांव में सरपंच होते ही हैं। कैलाश ने इस बीच कुछ स्वयंसेवी साथी भी जुटा लिये थे। उन्हें साथ लेकर वह गांव पहुंचा, सरपंच से मिला। सरपंच ने जब निःशुल्क सत्तू वितरण की योजना सुनी तो बहुत प्रसन्न हो गया। आखिर उसका गांव और उसके लोग ही तो लाभान्वित हो रहे थे। वह उत्साहपूर्वक इन्हें साथ लेकर गांव के गरीब और वंचितों की झोपड़ियों में ले गया।

अंश-45

सेहत के लिये 4 नुस्खे

(1) अजवायन का साप्ताहिक प्रयोग–

सुबह खाली पेट सप्ताह में एक बार एक चाय का चम्मच अजवायन मुँह में रखें और पानी से निगल लें। चबाएँ नहीं। यह सर्दी, खाँसी, जुकाम, बदनदर्द,कमर–दर्द, पेट दर्द, कब्जियत और घुटनों के दर्द से दूर रखेगा। 10 साल से नीचे के बच्चों को आधा चम्मच 2 ग्राम और 10 से ऊपर सभी को एक चम्मच यानी 5 ग्राम लेना चाहिए !

(2) मौसमी खाँसी के लिये सेंधा नमक–

'सेंधा नमक की लगभग 5 ग्राम डली को चिमटे से पकड़कर आग पर, गैस पर या तवे पर अच्छी तरह गर्म कर लें। जब लाल होने लगे तब गर्म डली को तुरंत आधा कप पानी में डुबो कर निकाल लें और नमकीन गर्म पानी को एक ही बार में पी जाएँ। ऐसा नमकीन पानी सोते समय लगातार दो–तीन दिन पीने से खाँसी, विशेषकर बलगमी खाँसी से आराम मिलता है। नमक की डली को सुखाकर रख लें एक ही डली का बार बार प्रयोग किया जा सकता है।

(3) बैठे हुए गले के लिये मुलेठी का चूर्ण–

मुलेठी के चूर्ण को पान के पत्ते में रखकर खाने से बैठा हुआ गला ठीक हो जाता है या सोते समय एक ग्राम मुलेठी के चूर्ण को मुख में रख कर कुछ देर चबाते रहे। फिर वैसे ही मुँह में रख कर जाएँ। प्रातः काल तक गला साफ हो जायेगा। गले के दर्द और सूजन में भी आराम आ जाता है।

(4) मुँह और गले के कष्टों के लिये सौंफ और मिश्री–

भोजन के बाद दोनों समय आधा चम्मच सौंफ चबाने से मुख की अनेक बीमारियाँ और सूखी खाँसी दूर होती है, बैठी हुई आवाज खुल जाती है,गले की खुश्की ठीक होती है और आवाज मधुर हो जाती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अनुभव अमृतम्

जीवन में सभी के साथ प्रतिक्षण कुछ घटित होता है। स्थितियाँ बदल जाती है, परिस्थितियाँ बदल जाती हैं, व्यक्ति बदल जाते हैं। इन सब स्थितियों में रहते हुए निर्लिप्तभाव से, समभाव से, समताभाव की पुष्टि से, भगवान कुछ कार्य कराता। कभी सिंहावलोकन करते हैं। 1971 से 1975 तक पाली मारवाड़ मूलचन्दजी डागा साहब उस समय बहुत वर्चस्व। आदरणीय लश्करी साहब, हरेरामजी लश्करी बड़ी श्रद्धा से उनको याद करते हैं।

वो पाली में असिस्टेन्ट सुपरिटेण्डेंट पोस्ट ऑफिसेज थे। असिस्टेन्ट सुपरिटेण्डेंट पोस्ट ऑफिसेज और भगवान की कृपा से उनके पुत्र चन्द्रप्रकाश जी लश्करी कई क्षेत्रों में विशेषज्ञ, और उनका निवास स्थान वहीं पर, एक कमरे में पढ़ाई करते थे। पोस्ट ऑफिस में एकाउन्टेंट का पद 45 रुपया उस समय स्पेशल–पे मिलती थी, तनख्वाह के अलावा। असिस्टेंट एकाउन्टेंट को 35 रुपया और एकाउन्टेंट को 45 रुपया।

ये परीक्षा भगवान की कृपा से दी गई। चार पेपर्स, चौथा पेपर जब हो रहा था उस समय पेपर देते–देते सुना कोई तार आया है। एस.पी. लश्करी के पास कोई नाम लिया गया है– कैलाश जी। मैंने परीक्षा देते सुना, साहब मेरे लिये कोई सूचना? नहीं, नहीं आपके लिये कोई सूचना नहीं, आप पेपर दीजिये।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 172 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023